उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थीयों की अध्ययन आदतों पर उनके पारिवारिक वातावरण के प्रभावों का अध्ययन

डॉ. भारती शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर,
बियानी गर्ल्स बी.एड. कॉलेज, जयपुर

रामी सिद्ध
बी.एड.एम.एड. छात्रा,
बियानी गर्ल्स बी.एड. कॉलेज, जयपुर

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रो की अध्ययन आदतो पर उनके पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। जनसंख्या के रूप में सरदारशहर तहसील के निजी एवं सरकारी शहरी एवं ग्रामीण कुल चार विद्यालयों का चयन किया गया है उच्च माध्यमिक विद्यालय का चयन उद्देश्य परक विधि से किया गया है। न्यादर्श में विद्यालय के 30 निजी तथ 30 सरकारी विद्यालय शहरी एवं ग्रामीण छात्र को लिया गया है। 60 छात्रो का चयन लॉटरी विधि से किया गया है। उपकरण के रूप में प्रमाणित मापनी का प्रयोग किया है। अध्ययन आदत अनुसूची (1989) एम.एन. पलसानी अनुराधा शर्मा पारिवारिक सम्बन्ध अनुसूची (1997) जी.पी. शैरी ली गयी है। आंकडे विश्लेषण के सांख्यिकी विविध 1 मध्यमान, 2 प्रमापविचलन 3 T मान का प्रयोग किया गया है। निष्कर्ष में पाया कि उच्च माध्यमिक राजकीय एवं निजी विद्यालय में अध्ययनरत् छात्रो की अध्ययन आदतो में सार्थक अन्तर है।

की–वर्ड: *उच्च माध्यमिक स्तर, छात्र, अध्ययन आदते, पारिवारिक वातावरण*

१.प्रस्तावना

शिक्षक विद्यार्थीयों में अध्ययन सम्बन्धि स्वस्थ आदतो का विकास कर तथा उनकी अन्तर निहित क्षमताओं व आकाक्षाओं को सही दिशा प्रदान करते है। शिक्षा व्यक्ति की मौलिक आवश्यकता है, शिक्षा हमारे जीवन के लिए बहुत आवश्यक है। शिक्षा के बिना हम हमारा जीवन पशु के समान है। जीवन में आगे बढ़ने तथा सफलता पाने के लिए शिक्षा आवश्यक है शिक्षा न केवल हमे सफल होने के लिए एक मच प्रदान करती है' बल्कि सामाजिक आचरण शक्ति, चरित्र तथा आत्म सम्मान भी देती है इस प्रकार शिक्षा ही व्यक्ति का मूल आधार है।

प्रगति पथ पर अग्रसर करने और उसे शिखर तक पहुँचाने का सबसे महत्वपूर्ण उतम और सरलतम साधन शिक्षा है। यही कारण है कि देश सर्व शिक्षा अभियान 2000–2001 चलाया गया था और शिक्षा को अनिवार्य शिक्षा कानुन बना दिया। भारत के संविधान 86 वें संशोधन द्वारा निःशुल्क अनिवार्य शिक्षा 6 से 14 का आदेश दिया गया। अनुच्छेद (21) ए भाग–3 के माध्यम से 86 वें संशोधन विधेयक में 6 से 14 साल को मुक्त और अनिवार्य शिक्षा के अधिकार को मौलिक अधिकार माना गया।

अच्छी शिक्षा प्राप्त करने के लिए अध्ययन समबिन्ध स्वस्थ आदतो का होना अतिआवश्यक है। स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का वास है। जब कोई भी राष्ट्रअपने विकास हेतु विभिन्न प्रकार के कार्य

कर रहा होता है। तब राष्ट्र की युवा शक्ति ही विकास हेतु उचित कार्यो में अपना सकारात्मक सहयोग प्रदान करते है। उस समय एक मात्र विद्यार्थी ही वह चेतन सहजग पहरी होता है जिसे बन्द ऑखो से ही जगना व खुली ऑखो से सोना पड़ता है।

बालक के विकास का प्रमुख आधार उसकी आदते है। विशेषकर उतम अध्ययन आदते व्यक्ति का चरित्र उसकी आदतो का ही पुॅज है। आदतन व्यक्ति का एक विशेष गुण होता है जो हर बच्चे में जन्म से होता है कुछ आदते प्रदत होती है। कुछ आदते परिवार, खेल, और स्कूल आदि से विकसित होती है, कुछ आदते उम्र के अनुसार परिवर्तित होती रहती है। लेकिन यदि परिवार के सदस्यो द्वारा बच्चो पर सही समय पर सही ध्यान में दिया जाये तो परिवर्तित होने वाले प्रयोग को सकारात्मक रूप दिया जा सकता है। जिसका प्रभाव शिक्षा पर भी सकारात्मक होगा। आदत किसी व्यक्ति के उस व्यवहार को कहते है जो बिना अधिक सोच के बार–बार दोहराया जाये। आदतो का उदभव स्त्रोत पारिवारिक वातावरण है। परिवार में बालक अपने माता–पिता द्वारा दिए गए पारिवारिक वातावरण में अपना व्यवहार की पुनरावृति होती है। यही व्यवहार आदतो का रूप धारण कर लेती है। जब व्यक्ति अपनी आदतो को श्रेष्ठ एवं स्थायी बना लेती है तब उसका जीवन नियमित हो जाता है।

२.अध्ययन का औचित्य

शिक्षा जीवन भर चलने वाली प्रक्रिया है जो मानव को उॅचाई की और अग्रसर करती है। उनकी मनभावनाओं को शुद्ध कर पारिवारिक वातावरण को संतुलित रूप प्रदान करती है, परिवार–बालक पर स्थाई प्रभाव अंकित कर देता है, वह वैसा ही बनता है जैसा परिवार बनता है अच्छी या बुरी आदतों का बच्चों के शारीरिक तथा मानसिक विकास पर गहरा प्रभाव पड़ता है। जहॉ अच्छी आदतें बच्चे के स्वास्थ्य विकास का मार्ग प्रशस्त करती है, वही बुरी आदतें उन्हे विनाश के मार्ग कि और ले जाती है घर या परिवार के प्रभाव के कारण ही गांधी जी ने प्रेम और सत्य के सिद्धान्तों को करके ही अपनाया, शिवाजी ने अपनी माता से रामायण और महाभारत की शिक्षा प्राप्त करके ही मराठा राज्य की नींव डाली लेकिन आज प्रजातांत्रिक शिक्षा के विकास के लिए लगनशील एवं निष्ठावान विद्यार्थीयों की आवश्यकता अनुभव हो रही है।

पारिवारिक वातावरण का शिक्षा के इतिहास के सभी मानको पर प्रभाव पड़ता है उच्च माध्यमिक स्तर पर बालको को किस प्रकार का पारिवारिक वातावरण मिलना चाहिए जिससे विद्यार्थियों में श्रेष्ठ अध्ययन आदतो का निर्माण हो सकें।

बालक की पारिवारिक वातावरण के द्वारा अध्ययन आदते किस प्रकार प्रभावित होती है तथा उसका तथ्य को जानने के लिए शोधार्थी ने उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्यनत्र पर विद्यार्थीयों को अध्ययन आदतों पर पारिवारिक वातावरण के प्रभावों को जानने का प्रयास किया गया है।

३.सम्बन्धित साहित्य

पाण्डेय मीनू (2018)" उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थीयों की सृजनात्मक पर संस्थागत वातावरण के प्रभाव का अध्ययन"। उद्देश्यः– उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थीयों की सृजनात्मकता पर संस्थागत वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करना उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों की सृजनात्मकता पर संस्थागत वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करना। निष्कर्ष प्रायः छात्र एवं अध्यापक धैर्य पूर्वक कार्य नही करतें परन्तु यदि छात्रो को पर्याप्त समय दिया जाये तो छात्रो में अधिक सृजनात्मक व्यवहार उत्पन्न किया जा सकता है। यसदि कक्षा कक्ष में छात्रो के समक्ष

खतरा मोल लेने की प्रवृति के साथ कार्य करने को प्रोत्साहित किया जा सकता है यदि सृजनात्मक क्षमताओं में विकास में सहायक होता है। छात्रों के सीखने में सृजनात्मक क्षमता वृद्धि के लिए यह बहुत आवश्यक है कि कक्षा–कक्ष का वातावरण खुला हुआ मजाकियां एवं पूर्णतया स्वतंत्र होना चाहिए।

तिवाड़ी राजेन्द्र कुमार (2016)" माध्यमिक स्तर के व्यावसायिक अभिरूचि पर पारिवारिक पर्यावरण के प्रभाव का अध्ययन " उद्देश्य व्यवसायिक शिक्षा के समस्त कार्यक्रमों में सामान्य वैज्ञानिक एंव विशिष्ट विषयों में समुचित सन्तुलन होना चाहिए।इस शिक्षा से समस्त कार्यक्रम तीव्र गति से विकसित होने वाले शिक्षा विज्ञान की प्रकृति के अनुरूप होने चाहिए। न्यादर्शः– प्रस्तुत अध्ययन में जनसंख्या के रूप में इलाहबाद जनपद मे स्थित माध्यमिक स्तर के कक्षा 11 व 12 में अध्ययनरत् समस्त विधार्थीयों को लिया गया। जिनमें से गुच्छ न्यादर्श विधि द्वारा कुल 200 विधार्थियों (120 छात्र एवं 80 छात्राओ का चयन किया गया। निष्कर्ष माध्यमिक स्तर के विद्यार्थीयों के पारिवारिक वातावरण तथा व्यवसायिक अभिरूचि के अध्ययनोपरान्त यह ज्ञात होता है कि घरेलू कामकाज एवं साहित्य व्यवसाय के प्रति सबसे अधिक विद्यार्थी आकृष्ट होते है। जबकि कृषि, वाणिज्य, वैज्ञानिक व्यवसाय हेतु सामन्य रूप से (12.5प्रतिशत) रूचि प्रदर्शित करते है जबकि 15 प्रतिशत विद्यार्थी प्रशासनिक सेवा में जाना चाहते है। लगभग 2.5 प्रतिशत विधार्थी अपने आय को सामाजिक कार्यो में लगाना चाहते है उपरोक्त अध्ययन से स्पष्ट होता है कि पारिवारिक वातावरण कही न कही व्यवसाय चयन को प्रभावित करता है।

शर्मा डॉ. देवकी नन्दन(2018)" पारिवारिक वातावरण एवं शैक्षिक उपलब्धि का सम्बन्ध– एक अध्ययन"। निष्कर्ष पारिवारिक सम्बन्ध, मूलभूत व पारिवारिक, प्रोत्साहन आदि कारण बालकों की अध्ययनशीलता को कई प्रकार से प्रभावित करते है। परिवार का वातावरण, परिवार के व्यक्तियों का विद्यार्थी के प्रति व्यवहार उसके शैक्षिक को प्रभावित करता है। उद्देश्य अध्ययन आदतो का सर्वेक्षण करना समायोजन स्तर का पता लगाना उच्च एवं निम्न समायोजित विद्यार्थीयों की अध्ययन आदतों की तुलना करना समायोजन का उनकी अध्ययन आदतों पर पड़ने वाले प्रभाव का विश्लेषण करना। न्यादर्श प्रस्तुत शोध कार्य सहानपुर मेरठ व बिजनौर जनपद के अन्तर्गत संचालित राजकीय आश्रम पद्धति के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् कक्षा 11 के विद्यार्थीयों (सत्र 2017–18) की जनसंख्या से उपलब्धता के आधार पर 80 छात्र एवं 60 छात्राएं निष्कर्ष शोधकार्य छात्र एंव छात्राओं की अध्ययन आदतों में 99 प्रतिशत तक अन्तर रहता है छात्रो की अपेक्षा छात्राओं की अध्ययन आदतें अधिक अच्छी रहती है। सामान्य रूप में निम्न समायोजित छात्रो अथवा छात्राओं की अपेक्षा उच्च समायोजित छात्रो अथवा छात्राओ की अध्ययन आदतें अधिक रहती है। किन्तु यह कहता 95 प्रतिशत भी सार्थक नहीं है। राजकीय आश्रम पद्धति के अन्तर्गत अध्ययनरत् विद्यार्थीयों में अपने समायोजन स्तर तथा अध्ययन आदतों के प्रति जागरूकता विकसित होगी।

कुमार कुलदीप(2019)" माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की अध्ययन आदतों का समायोजन स्तर के सन्दर्भ में अध्ययन" उद्देश्यः– माध्यमिक स्तर के विद्यार्थीयों के शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करना। उच्च माध्यम एवं निम्न पारिवारिक वातावरण के विद्यार्थीयों के शैक्षिक उपलिब्ध का तुलनात्मक अध्ययन करना। न्यादर्श प्रयागराज जनपद के शहरी क्षेत्र में स्थित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं को जनसंख्या माना गया है। माध्यमिक विद्यालय का चयन उद्देदश्य परक विधि से किया गया है। तत्पश्चात् उसमें अध्ययनरत् 100 छापा एवं 100 छात्राओं अर्थात कुल 200 विद्यार्थीयों का चयन स्तरीकृत यादृच्छित विधि से किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्ष में पाया गया कि माध्यमिक स्तर के विधार्थीयों के शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण पर प्रभाव है अर्थात् मध्यम एवं निम्न पारिवारिक वातावरण वाले विद्यार्थीयों की शैक्षिक उपलब्धि एक दूसरे से भिन्न है। अतः कहा जाता है कि माता–पिता द्वारा अपने बच्चो के साथ स्वच्छदता स्वतन्तंत्र की भावना रखनी चाहिए तथा कि शोरावस्था के बालक बालिकाओं के आत्म प्रकटीकरण पर रोक बेझिझक अपने बातों को माता–पिता के साथ कह सकें जिससे उनका व्यक्तित्व

विकास एवं सवेगात्मक बुद्धि प्रारम्भ न हो सके। माता पिता को बच्चों के साथ उन सर्जनात्मक गतिविधियों को अधिकाधिक प्रोत्साहन प्रदान करना।

नागेश, सुश्री हेमलता, (2019)" बस्तर के शालेय वातावरण एवं अध्ययन आदतो का विद्यार्थीयों के व्यक्तिव एवं शैक्षिक अभिवृति पर प्रभाव का अध्ययन" उद्देश्यः—शालाओ में अध्ययनरत् विद्यार्थीयों के शालेय वातावरण का उनके व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना। शालाओं में अध्ययनरत् विद्यार्थीयों के शालेय वातावरण का उनकी शैक्षिक अभिवृति पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन। न्यादर्श शालेय में अध्ययनरत् विद्यार्थीयों को न्यादर्श में 200 विद्यार्थी लिया गया 100 छात्र तथ 100 छात्राओं का चुनाव किया गया। निष्कर्षः— शालेय वातावरण का आदिवासी विद्यार्थीयों की सवेगात्मक परिपक्वता पर प्रभाव का भविष्य में अंकलन संभावित है। शालेय वातावरण का आदिवासी विद्यार्थीयों के संज्ञानात्मक आयामों पर प्रभाव का भविष्य में आंकलन संभावित है।

४.साहित्य विवेचना

उपर्युक्त संबंधित शोध साहित्य का अध्ययन विश्लेषण व उस पर चिन्तन करने पर प्रस्तुत शोध समस्या की सम्प्रयात्मक पृष्ठभूमि तथा अनुसधान प्रारूप एवं निष्कर्ष हेतु शोधकर्ता को अपने कार्य का जो आधार प्राप्त हुआ उसका सांराश प्रस्तुतीकरण निम्न प्रकार है। उच्च माध्यमिक स्तर अध्ययन आदतो पर परिवारिक वातावरण के प्रभाव के संबंध में शोध कम पाया जाता है। राजस्थान चूरू जिले के सरदारशहर तहसील में अध्ययन आदतो पर पड़ने वाले पारिवारिक वातावरण हेतु अभिभावको में जागरूकता की कमी पाई गई इस हेतु अध्ययन कार्य नही या कम हुआ है अध्ययन आदतो पर पारिवारिक वातावरण का नकारात्मक प्रभाव भविष्य के लिय चुनौती है। जिसका समाधान आवश्यक है। अध्ययन आदतो पर पारिवारिक वातावरण का सकारात्मक प्रभाव अतिआवश्यक है। विद्यार्थी को अच्छे नागरिक बनाने के लिए अध्ययन आदतो एवं पारिवारिक वातावरण का उच्च होना अति आवश्यक है। सकारात्मक मार्गदर्शन के लिए शोध अति आवश्यक है।

५.समस्या कथन

"उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थीयों की अध्ययन आदतों पर उनके पारिवारिक वातावरण के प्रभावों का अध्ययन"

६.शोध के उदेश्य

उच्च माध्यमिक स्तर पर राजकीय एवं निजी विद्यालयों में अध्ययनतर विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों पर उनके पारिवारिक वातावरण के प्रभावों का अध्ययन।

७.अध्ययन में प्रयुक्त विधि

प्रस्तुत अध्ययन की प्रकृति व उददेश्यों को ध्यान में रखते हुए शोधकर्ता ने दन्तसंकलंन हेतु अनुसंधान की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है यह विधि शोध की मनोवैज्ञानिक एवं प्रमाणिक विधि है।

८.शोध में प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में मनवीकृत विधि का प्रयोग में ली गई है। अध्ययन आदत अनुसूची (1989) एम.एन. पलसानी अनुराधा शर्मा पारिवारिक संबन्ध अनुसूची (1997) जी.पी.शैरी जे.सी.सिन्हा। इन मानवीकृत प्रश्नावली का प्रयोग आंकड़ों संकलन के लिए किया गया है।

९.शोध में प्रयुक्त न्यादर्श

वर्तमान शोधकर्ता में शोधकर्ता चूरू जिले की सरदारशहर तहसील में स्थित राजकीय एवं निजी (उच्च माध्यमिक विद्यालय) में अध्ययनरत 240 विद्यार्थीयों (120 राजकीय 120 निजी विद्यालय) को चयनित किया है।

१०.अध्ययन में प्रयुक्त संख्यिकी

प्रस्तुत अध्ययन में प्रदतो के विश्लेषण में 1 मध्यमान 2 प्रमाप विचलन 3 t मान (CR) का प्रयोग किया गया तथा सारणी तथा दण्ड ग्राफ के माध्यम से आंकड़ों का निरूपित किया गया है।

परिकल्पनाः–1 उच्च माध्यमिक स्तर पर राजकीय एवं निजी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थीयो की अध्ययन पर उनके पारिवारिक वातावरण के प्रभावो में सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी संख्या 1

समूह	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D)	t मान
राजकीय विद्यालय	120	62.21	12.30	0.64
निजी विद्यालय	120	61.97	9.97	

df = $N_1 + N_2 = 60 + 60 – 2 = 118$) T = 0.01 = 2.62, 0.05 = 1.98

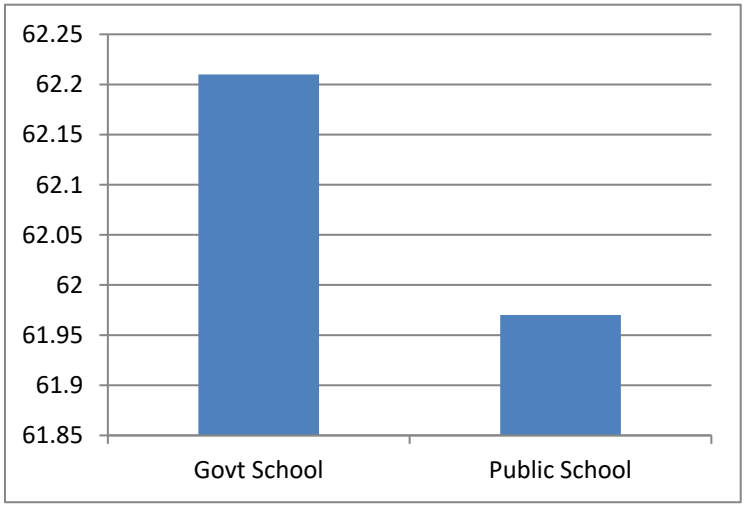

परिणाम

राजकीय एवं निजी विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थीयों की अध्ययन आदतो पर उनके पारिवारिक वातावरण के प्रभावो से सम्बन्धित मध्यमान क्रमश 62.21 तथा 61.97 एवं मानक विचलन क्रमशः 12.30 तथा 9.97 दिये गये है। इन मानो के आधार पर क्रान्तिक अनुपात का मान 0.64 प्राप्त हुआ है। यह मान स्वतन्त्रता के स्तर 118 के 0. 05 तथा 0.01 सार्थकता के स्तरों पर क्रान्तिक अनुपात के सारणी मान क्रमशः 1. 98 तथा 2.62 से कम है अतः निर्धारित शून्य परिकल्पना सार्थकता के दानो (0.05 तथा 0.01) पर स्वीकृत की जाती है। और निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि उच्च माध्यमिक स्तर पर राजकीय एवं निजी विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थीयों की अध्ययन आदतों पर उनके पारिवारिक वातावरण के प्रभावो में कोई सार्थक नहीं है। उक्त परिकल्पना, उच्च माध्यमिक स्तर पर राजकीय एवं निजी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की अध्ययन आदतो पर उनके पारिवारिक वातावरण के प्रभावों के आधार पर, विश्वास के दोनो स्तरों (0.05 तथा 0.01) पर स्वीकृत हो रही है। अतः कहा जा सकता है कि राजकीय एवं निजी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की अध्ययन आदतो पर उनके पारिवारिक वातावरण के प्रभावों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

११.निष्कर्ष

उच्च माध्यमिक स्तर पर राजकीय एवं अनुदानित विद्यालय में अध्ययनरत् विधार्थियों की अध्ययन आदतों पर उनके पारिवारिक वातावरण का कोई भी प्रभाव नही पड़ता है। इसका यह कारण हो सकता है कि विधार्थी उच्च माध्यमिक स्तर पर पूर्णतया परिपक्व हो चुका होता है। वह अपना भला

बुरा स्वयं समझता है। उस पर अन्य किसी ऐसे व्यक्ति का प्रभाव अतिशीघ्र पड़ जाता है, जो उसकी परिपक्व आदतों को पूर्ण करने में सहायता करतें है, लेकिन परिवार आदतों को पूर्ण करने में सहायता करतें है, लेकिन परिवार के सदस्य (माता, पिता एवं अन्य) इन आदतों को पूर्ण करने में बाधक होते है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

१. पाण्डेय मीनू (2018). नेट (शिक्षाशास्त्र) नेहरू ग्राम भारती (मानित विश्वविद्यालय) इलाहबाद (उ.प्र.)
२. तिवाड़ी रामेन्द्र कुमार (2016). शिक्षक शिक्षा विभाग, नेहरू ग्राम भारती विश्वविद्यालय इलाहबाद
३. कुमार कुलदीप शिक्षाशास्त्र विभाग, हिमगिरी जी विश्वविद्यालय देहरादून उतराखण्ड
४. नागेश सुश्री हेमलता (2019). मेट्स स्कूल ऑफ एजुकेशन मैट्स युनिर्वसिटी रायपुर(छ.ग)
५. www.slideshar.net
६. www.google.com
७. em.m.wikipedia.org
८. http://inted.in
९. http://journalspenprintory
१०. http://hdl.handle.net//0603/504554
११. http://ijossrnline.in
१२. http://echetance.com